ISO 9001:2008

मसाला समाचार

भाकृअनुप- भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
मेरिकुन्नु (पी. ओ.), कोषिक्कोड (केरल), भारत

अंक 26 खण्ड 1 (तिमाही)
जनवरी - मार्च 2015

निदेशक की कलम से

वर्ष 2015 की शुरूआत अच्छी हुई है और हम मसाला उत्पादन हेतु अपनी नीतियों के कार्यान्वयन के लिये प्रतिबद्ध है। आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणन उपलब्धि हमारे संस्थान के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। यह इस बात का प्रमाण है कि हमने अपनी गुणवत्ता प्रबन्धन प्रणाली को कायम रखा है।

हम अपने आपको कई कारणों से गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। हम ना केवल संयुक्त परिश्रम के फलस्वरूप चेलवूर कैंपस में अदरक एवं हल्दी का उत्पादन करने में सफल हुये। बल्कि हमने उनको भी गलत साबित किया जो इस क्षेत्र को अदरक एवं हल्दी की खेती के लिए अनुचित मानते थे। यहां से हल्दी एवं अदरक की औसत 7-8 कि. ग्राम / बेड उपज प्राप्त हयी। संपुटन पी जी पी आर (बायोकैप्स्यूल) की जांच जुनागड में की जा रही है तथा सूक्ष्म पोषण संयोजन को वाणिज्यीकरण के लिये अन्य उद्यमियों को लाइसेंस दिया गया। हमारे प्रायोगिक प्रक्षेत्र पेरुवण्णामुषि में स्थापित मसाला संसाधन इकाई के कार्यान्वयन से मुझे अपार खुशी है तथा कुछ प्रगामी उद्यमियों ने इन सुविधाओं को उपयुक्त करने के लिये पंजीकरण कराया है। कृषि संसाधन में उद्यमियों को कुशल बनाने के लिये संस्थान ने केरला इन्डस्ट्रियल एण्ड टेकनिकल कन्सल्टेन्सी ओरगानाईसेशन लिमिटड (किटको) के साथ एम ओ यु हस्ताक्षरित किया है।

इस वर्ष के प्रारंभ में ही हमने चार प्रमुख कार्यक्रमों जैसे, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, इण्डियन फाइटोपैथोलजिकल सोसाइटी (आई पी एस) की राष्ट्रीय संगोष्टी, *फाइटोफ थोरा, फ्युसेरियम* एण्ड *रालस्टोनिया* डिज़ीसस ओफ होर्टिकल्चरल एण्ड फील्ड क्रोप्स (फाइटोफ्यूरा) पर आउटरीच परियोजना की समीक्षा तथा डीबीटी द्वारा प्रायोजित अल्प अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस बहुत उत्साह के साथ 28 फरवरी 2015 को मनाया गया। क्योंकि यह वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय मृदा वर्ष है। इसलिये हमने एक मृदा परीक्षण एवं परामर्श अभियान आयोजित किया। आई पी एस राष्ट्रीय संगोष्ठी को 16-17 मार्च, 2015 तथा 18 मार्च 2015 को फाइटोफ यूरा के पांचवीं समीक्षा बैठक तथा 17-20 मार्च, 2015 को नेक्स्ट जनरेशन सीक्वन्सिंग : डेटा एनालिसिस एण्ड एनोटेशन पर डी बी टी द्वारा प्रयोजित अल्प अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये।

प्रोफेसर के. वी. पीटर की अध्यक्षता में 18-20 फरवरी 2015 को सातवीं शोध सलाहकार समिति की दूसरी बैठक संपन्न हुई जिसमें बहुमूल्य संस्तुतियां की गयी जिनका पालन करने के लिये हम प्रतिबद्ध है। अब यह उपयुक्त समय है जब हमें मिलकर एक परिवर्तन लाना है जो हमारे संस्थान को उन्नति तक पहुंचाये बल्कि यह भी सुनिश्चित करें कि इस अनुसंधान एवं विकास का परिणाम सभी किसानों तथा उपभोक्ताओं तक पहुंचें। मुझे आशा है कि हम अपनी इच्छाओं को दृढ निश्चय एवं विश्वास से ज़रूर हासिल कर लेंगे।

एम. आनन्दराज

(एम. आनन्दराज)

विषय सूची

अनुसंधान	2
पुरस्कार/सम्मान	2
प्रमुख घटनायें	3
हिन्दी अनुभाग	6
प्रकाशन	6
तकनीकी स्थानान्तरण	6
कृषि विज्ञान केन्द्र	7

अनुसंधान

काली मिर्च बाधित *कोलेटोट्राइकम ग्लोयियोस्पा `रियोयिड्स* का अध्ययन

काली मिर्च बाधित *सी. ग्लोयियोस्पोरियोयिड्स* की संक्रमण प्रक्रिया से जुडे हुये अनुक्रम के प्रभाव का प्रयोगशाला में अध्ययन किया गया। संचारण के चार घण्टों के बाद कोनिडियल अंकुरण अंकित किया गया। कोनिडिया संचित न होने की अवस्था में अधिक अंकुरण अंकित किया गया जो बाद में मेलनाइस्ड अप्रेसोरिया का उत्पादन करते हैं। मिसोफिल कोशों में हाइफे के आक्रमण के फलस्वरूप 48 घण्टों के बाद स्थानीय कोशों का नाश अंकित किया गया। कोशों में एसरवुलस का रूपांकन करके 48 तथा 72 घण्टों के बाद उन्नत सटे के साथ पक्व एसरवुली का निरीक्षण किया गया। पत्तों के बाहर 72 घण्टों के बाद कई चित्तियां अंकित की गई तथा संक्रमित कोश बाद में भूरे रंग में परिवर्तित हो गये। फलस्वरूप संचारण के 72 घण्टों के बाद द्रुत नाश एवं पौधे की मृत्यु अंकित की गई।

जननद्रव्य संकलन

काली मिर्च जननद्रव्य संकलन कार्यक्रम के अन्तर्गत मांकुलम जंगली क्षेत्र में सर्वेक्षण करके 85 अक्सेशनों को संकलित करके जननद्रव्य संग्रहालय में सम्मिलित किया गया। *पाइपर बारबरी* - रेड डेटा बुक में अंकित एक विलुप्त स्पीसीस की आनक्कुलम जंगली क्षेत्र में उपस्थित दर्ज की गयी। अदरक के पांच अक्सेशनों जिनमें एक अधिक घने प्रकार भी शामिल हैं (स्रोतः श्री जोण जोसफ, कोडंचेरी) को संचित करके जीन बैंक में परिरक्षित किया गया।

अदरक जननद्रव्य संकलन

अदरक में संक्रमित *आर. सोलानसीरम* बयोवार 3 रेस 4 की एल ए एम पी (लूप मबडियेटड आईसेथेरमल एम्प्लिफिकेशन) द्वारा पहचान

GyrB जीन में एल ए एम पी डिसाइनर 1-12 द्वारा छः प्राइमर्स के एक सेट का रूपांकन किया गया तथा अदरक के *आर. सोलानसीरम* वियुक्तियों तथा अन्य सोलानेसियस फसलों के *आर. सोलानसीरम* वियुक्तियों के साथ मूल्यांकित किया गया। केवल अदरक वियुक्तियों के लिये विशिष्ट प्रवर्धन प्राप्त हुआ जो एल ए एम पी प्राइमर के साथ उन्नत विशिष्टता भी दिखाता है। *आर. सोलानसीरम* के मृदा डी एन ए तथा जीनोमिक डी एन ए के साथ अन्य मूल्यांकन किया गया। संवेदनशीलता को मानकीकृत करने के लिये, जीनोमिक डी एन ए के विभिन्न गुणवत्ताओं का प्रवर्धन किया गया। फलस्वरूप, रियल टाइम एल ए एम पी डी एन ए की 50 पी जी तक प्रवर्धित कर सकते हैं। इस तकनीकी को खेत में रोपण के पहले अदरक बाधित *रालस्टोनिया* का निदान करने के लिये तथा बीज परीक्षण के लिये भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

इलायची थ्रिप्स में जीवाणु एन्डोसिम्बयोन्ट, *वोलबाकिया* का चरित्रांकन

भारत के इलायची उत्पादित विभिन्न जिलों से संचित नर एवं मादा थ्रिप्स के सुपर ग्रुप बी में इलायची थ्रिप्स. *सियोथ्रिप्स कारडमोमी* हारबर्स जीवाणु एन्डोसिम्बयोन्ट, *वोलबाकिया* सब ग्रुप कोन में शामिल हैं। इलायची थ्रिप्स में संक्रमित *बोलबाकिया* की यह पहली रिपोर्ट है।

इलायची थ्रिप्स में संक्रमित कीटनाशक कवक

थ्रिप्स बाधित इलायची से एक कीटनाशक कवक को वियुक्त किया गया तथा जिसकी *लीकानिसिलियम प्सालियोटे* (थ्रेश्यू) ज़रे तथा डब्ल्यु गेम्स (अस्कोमिकोटाः हाइपोक्रियल्स) के रूप में पहचान की गयी। संशुद्ध कोनिडियल सस्पेन्शन के साथ जैव परीक्षण अध्ययन करने पर थ्रिप्स के प्रति कवकों की बाधा की पुष्टि की गयी। इस कवक की प्रयोगशालोमें 62.9% मारक क्षमता अकिंत की गई। यह भारत में *एल. प्सालियोटे* तथा थ्रिप्स बाधित इलायची की पहली रिपोर्ट है।

पुरस्कार / सम्मान / मान्यतायें

आई एस ओ प्रमाणपत्र

गुणवत्ता प्रबन्धन प्रणाली के कार्यान्वयन के लिये भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड को आई एस ओ 9001:2008 प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ। यह प्रमाण पत्र 10 मार्च 2015 से 9 मार्च 2018 तक वैध है।

भागीदारी पुरस्कार

राष्ट्रीय नवोत्पाद संगठन द्वारा भाकृअनुप- भा म फ अनु सं को नवोत्पाद कार्यक्रमों के लिये भागीदारी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संस्थान के निदेशक डा. एम. आनन्दराज ने यह पुरस्कार ग्रहण किया। इस पुरस्कार में 50,000 नकद राशि, स्मृति चिह्न तथा प्रमाण पत्र शामिल था।

उत्तम प्रदर्शनी स्टाल पुरस्कर (द्वितीय)

भाकृअनुप-भा म फ अनु सं के क्षेत्रीय स्टेशन अप्पंगला को 10 जनवरी 2015 को भाकृअनुप- केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड के क्षेत्रीय स्टेशन विट्टल में आयोजित कृषि मेला 2015 में सरकारी स्टाल वर्ग के अन्तर्गत उत्तम प्रदर्शनी स्टाल पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआ।

उत्तम शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार

उत्तर पूर्व भारत बागवानी समिति, नागालैंड द्वारा 26-28 फरवरी 2015 को आयोजित नेशनल सेमिनार ओन सस्टनिबिल होर्टिकल्चर विस ए विस चेंजिंग एनवियोर्नमेंट में आंकेगौडा, एस. जे., कृष्णमूर्ति के. एस. तथा बिजु सी. एन. के शोध पत्र "इवालुवेशन ओफ स्मोल कारडमोम जीनोटाइप्स फोर क्वालिटी एण्ड यील्ड" के लिये उत्तम शोध पत्र प्रस्तुति पुरस्कार (द्वितीय) प्राप्त हुआ।

ए. ईश्वर भट्ट

अप्लाइड बोटनी विभाग, मैंगलूर विश्वविद्यालय में 11 मार्च 2015 को आयोजित **पी एच. डी. की मौखिक परीक्षा के अध्यक्ष।**

इंडियन फाइटोपैथोलजिकल सोसाइटी की 67 वीं वार्षिक बैठक एवं भाकृअनुप-भा. म. फ अनु. सं., कोषिक्कोड में 16-17 मार्च 2015 को अण्डरस्टैंडिंग होस्ट पैथोजन इन्टरेक्शन्स थ्रू साइन्स ओफ ओमिक्स पर आयोजित **राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक सचिव।**

एस. जे. ईपन

वाई ए एस एच ए डी ए, पुणे में 8 जनवरी 2015 को आयोजित सूत्रकृमि प्रबन्धन, ए चलेंज टु इंडियन एग्रिकल्चर इन दि चेंजिंग क्लाइमट पर आयोजित **राष्ट्रीय संगोष्ठी सत्र के अध्यक्ष।**

सुशीला भाय आर.

विशेष अतिथि, डवेलेपमेंट ओफ माइक्रोबयोलोजिकल स्टेन्डेड्र्स फोर स्पाइसेस के लिये बयोलोजिकल हज़ाड्र्स एक्स्पर्ट ग्रुप की तेरहवीं बैठक- एफ एस एस ए आई, नई दिल्ली, 20, मार्च 2015।

भाकृअनुप-भा. म. फ अनु. सं., कोषिक्कोड में 16-17 मार्च 2015 को अण्डरस्टैंडिंग होस्ट पैथोजन इन्टरेक्शन्स थ्रू साइन्स ओफ ओमिक्स पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में रियल टाइम लूप मीडियटड आईसोथेरमल एम्प्लिफिकेशन - एन एड्वान्स्ड टूल फोर दि फील्ड डायग्नोसिस ओफ रालस्टोनिया सोलानसीरम बयोवार 3 इनफक्टिंग जिंजर को **उत्तम पोस्टर पुरस्कार** प्राप्त हुआ।

विदेश प्रतिनियुक्ति

डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप-भा. म. फ. अनु. सं. तथा अन्तर्राष्ट्रीय काली मिर्च समिति के आर तथा डी के अध्यक्ष ने लामपंग, इन्डोनेशिया में 23-25 मार्च 2015 को संपन्न हुई अन्तर्राष्ट्रीय काली मिर्च समिति की बैठक में भाग लिया। इस बैठक का प्रमुख लक्ष्य काली मिर्च की गुणवत्ता एवं रोपण सामग्रियों के उत्पादन को बढाना है।

प्रमुख घटनायें

कम्पोस्टिंग एवं पुनर्चक्रण

परिसर को साफ एवं स्वच्छ बनाने के सिवा जैविक अवशेषों को प्रभावी ढंग से पुनर्चक्रण करने के लिये आई सी ए आर- आई आई एस आर फार्म क्रियाओं का एक एकीकृत अंग है कम्पोस्टिंग। पेडों से गिरने वाले पत्तों की बहुमूल्य खाद बना सकते हैं। कम्पोस्ट बनाने के लिये परंपरागत कम्पोस्ट तथा कम्पोस्ट बिन (3.0 मी x 1.0 मी x 0.5 मी) दोनों का प्रयोग करते हैं। इन विधियों द्वारा एक वर्ष में औसत 2.0 टन कम्पोस्ट का उत्पादन करके नर्सरी में पोटिंग मिश्रण के लिये प्रयुक्त किया गया।

इंडियन फाइटोपैथोलोजिकल सोसाइटी की 67 वीं वार्षिक बैठक एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

इंडियन फाइटोपैथोलोजिकल सोसाइटी, नई दिल्ली की 67 वीं वार्षिक बैठक एवं "अण्डरस्टैंडिंग होस्ट पैथोजन इन्टरेक्शन्स थ्रू साइन्स ओफ ओमिक्स" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

भाकृअनुप-भा. म. फ अनु. सं., कोषिक्कोड में 16-17 मार्च 2015 को संपन्न हुई। इसका उद्घाटन सुप्रसिद्ध पादप रोग वैज्ञानिक डा. वाई आर शर्मा, एफ ए ओ कन्सल्टेन्ट एवं भूतपूर्व निदेशक, भा. म. फ अनु. सं. ने किया तथा डा. एम. आनन्दराज, निदेशक एवं अध्यक्ष, इंडियन फाइटोपैथोलोजिकल सोसाइटी ने समारोह की अध्यक्षता तथा उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय भाषण दिया। डा. एस. देवसहायम, अध्यक्ष, फसल संरक्षण प्रभाग, डा. प्रतिभा शर्मा, सचिव, इंडियन फाइटोपैथोलोजिकल सोसाइटी तथा डा. ए. आई. भट्ट, आयोजक सचिव ने भी सभा को संबोधित किया।

इस संगोष्ठी में महामारी विज्ञान, रोगनिदान, पोषक -रोग-जनक संबन्ध तथा एकीकृत रोग प्रबन्धन जैसे विषयों पर तीन तकनीकी सत्र थे। अनुसंधान संस्थानों एवं व्यवसाय भागीदारियों के बीच अनुसंधान की वरीयता एवं आवश्यकताओं के उत्तम अभिसरण को लाने के लिये एक विशेष व्यवसाय - शोधकर्मी इन्टरफेस सत्र का भी आयोजन किया गया। देश के विभिन्न भागों के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों से लगभग 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

इस संगोष्ठी में पादप सामग्रियों में जैव-सुरक्षा तथा देशी संगरोध की आवश्यकता को संस्तुत किया। इस बैठक में रोपण सामग्रियों के उत्पादन से जुडे हुये पौधशालाओं के प्रमाणीकरण की आवश्यकता पर सहमति दी गयी। एक रासायनिक कीट नाशक को केन्द्रीय कीटनाशक बोर्ड की परिधि से जैवनियन्त्रण को चिन्हित करने का निर्णय किया। पादप संरक्षण के लिये पादप रोगजनकों के राष्ट्रीय डेटाबेस के निर्माण, अधिक विस्तृत तकनीकी प्रदर्शनी तथा कौशल वृद्धि के लिये वैज्ञानिकों को आगामी सालों में समाज की गतिविधियों में वरीयता देनी चाहिये।

डा. वाई. आर. शर्मा, एफ ए ओ परामर्शदाता राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुये।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

संस्थान में 28 फरवरी 2015 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। डा. पी. जयराज, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, कण्णूर ने जैविक खेती प्रणाली में मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन पर व्याख्यान दिया। उन्होंने स्वच्छ एवं संरक्षित उपज में स्वस्थ मृदा के उपयोग पर प्रकाश डाला। बैठक की अध्यक्षता डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भा.म. फ.अनु. सं., कोषिक्कोड ने की। इस अवसर पर डा. पी. राजीव, प्रधान वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर एक मृदा परीक्षण एवं परामर्श अभियान भी आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता डा. टी. जे. ज़करिया, प्रभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन एवं फसलोत्तर प्रौद्योगिकी प्रभाग ने की। किसानों के लिये डा. एस. हमज़ा, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन पर व्याख्यान दिया। किसानों द्वारा लाये गये मृदा नमूनों की जांच करके मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन पर आवश्यक परामर्श दिये।

अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना

डा. के. निर्मल बाबू, परियोजना समन्वयक, अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना, कोषिक्कोड डा. उत्पला पार्थसारथी, मुख्य तकनीकी अधिकारी, डा. विकास सिंह, ओ आई सी, ए आई सी आर पी एस, पासीघाट केन्द्र, श्री. ए. हाय, बागवानी अधिकारी, अनजाउ जिला, अरुणाचल प्रदेश के सम्मिलित दल ने अरुणाचल प्रदेश के लोहित एवं अनजाउ जिले के बडी इलायची उगाने वाले क्षेत्रों के मूल्यांकन हेतु सर्वेक्षण किया।

इसी दल ने श्री छत्री, भूमि संसाधन अधिकारी तथा श्री. गोस्वामी, विपणन अधिकारी, अमलगमेटेड प्लान्टेशन्स की भागीदारी एवं मदद से नागालैंड के मोन गांव, मोन के लोंगखोंग गांव तथा इन्डो बर्मा सीमा प्रदेश के लुंगवाह गांव का सर्वेक्षण किया जहां बडी इलायची की खेती व्यापक तौर पर की जाती है। आदिवासी समूह के अध्यक्ष एवं किसानों के साथ बडी इलायची खेती की समस्याओं के बारे में परस्पर चर्चा की।

आई टी एम यू-बी पी डी इकाई

तकनीकियों का वाणिज्यीकरण

काली मिर्च, अदरक, हल्दी तथा इलायची का उत्पादन बढाने हेतु सूक्ष्मपोषण मिश्रण के वाणिज्यीकरण के लिये चार करार एन आर डी सी द्वारा सर्वश्री रेयिनबो एग्री लाइफ, कडपा, आन्ध्र प्रदेश को दिया गया। सर्वश्री श्रेय अग्रिटेक, हुब्ली, करनाटक को काली मिर्च के लिये सूक्ष्म पोषण मिश्रण के वाणिज्यीकरण हेतु करार हुआ। सूक्ष्मपोषण तकनीकी द्वारा 9.5 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। हल्दी प्रजातियों के दो करारों का नवीनीकरण किया गया।

के आई टी सी ओ के साथ एम ओ यु

भाकृअनुप-भा. म. फ. अनु. सं. ने उद्यमियों के विकास को संयुक्त रूप से प्रोत्साहित करने के लिये 31 मार्च 2015 को केरल व्यवसाय एवं तकनीकी परामर्श संगठन लिमिटेड (के आई टी सी ओ) के साथ मेमोरेन्डम ओफ अण्डरस्टेंडिंग किया।

आई आई एस आर ने उद्यमियों के लिये के आई टी सी ओ द्वारा प्री- इनक्युबेशन प्रशिक्षण, विपणि संभाव्य अध्ययन आदि प्रदान किया।

भाकृअनुप-भा. म. फ. अनु. सं. के निदेशक एवं के आई टी सी ओ के प्रतिनिधियों द्वारा एम ओ यु।

बागवानी संस्थान-व्यवसाय इन्टफेस मीट में भागीदारी

तकनीकियों के वाणिज्यीकरण को बढाने हेतु भाकृअनुप-भा म फ अनु सं ने 10 फरवरी 2015 को भाकृअनुप- भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलूरू में आयोजित चौथी बागवानी संस्थान- व्यवसाय इन्टरफेस मीट में भाग लेकर तकनीकियों को प्रदर्शित किया।

शोध सलाहकार समिति की बैठक

सातवीं शोध सलाहकार समिति की दूसरी बैठक 18-20 फरवरी 2015 को भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड में प्रोफसर. के. वी. पीटर, निदेशक, वर्लड नोनी रिसर्च फाउण्डेशन, चेन्नई तथा पूर्व उप कुलपति, केरल कृषि विश्वविद्यालय, की अध्यक्षता में संपन्न हुई। डा. एम. आर. सुदर्शन, पूर्व निदेशक (अनुसंधान), स्पाइसेस बोर्ड, कोचि, डा. एम. एन. वेणुगोपाल, पूर्व कार्यालयाध्यक्ष, इलायची अनुसंधान केन्द्र, अप्पंगला, डा. के. के. शर्मा, राष्ट्रीय समन्वयक, ए आई एन पी ओन पेस्टिसाइड रेसिड्यूस, भाकृअनुप- भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली, डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान आदि उपस्थित थे। दस महा परियोजनाओं के अन्तर्गत 46 उप परियोजनाओं की प्रमुख उपलब्धियों को महा परियोजना के अन्वेषकों द्वारा प्रस्तुत किया गया। । परियोजना समन्वयक (प्रभारी), कृषि विज्ञान केन्द्र ने भी केन्द्र की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। सभी प्रस्तुतियों के बाद शोध सलाहकार समिति द्वारा विस्तृत चर्चा की गयी एवं सुझाव दिये गये। दिनांक 19 फरवरी 2015 को समिति ने भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय स्टेशन, अप्पंगला तथा किसानों के खेतों (पन्या एस्टेट, सुनतिकोप्पा, एस एल एन प्लान्टेशन्स, चेताली) का भ्रमण किया। इस समिति ने केन्द्रीय बागवानी प्रायोगिक प्रक्षेत्र (सी एच ई एस, चेताली) को भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान के काली मिर्च जननद्रव्य के वैकल्पिक स्थान एवं प्रो ट्रे द्वारा उत्पादित काली मिर्च को देखने के लिये भ्रमण किया। बैठक का समापन सत्र 20 फरवरी 2015 को अपराह्न 10.30 बजे संपन्न हआ। इस अवसर पर संस्थान का प्रकाशन रिसर्च हाइलाइट्स (2014-15) को डा. टी. जानकीराम, सहायक महानिदेशक (बागवानी -II) भाकृअनुप, नई दिल्ली ने विमोचित किया।

शोध सलाहकार समिति की बैठक का उद्घाटन सत्र

मानव संसाधन विकास

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान ने 21 जनवरी से 10 फरवरी 2015 तक जीनोमिक्स एण्ड प्रोटियोमिक्स इन प्लान्ट्स एण्ड माइक्रोब्स टुवर्ड्स ट्रान्स्लेशनल रिसर्च पर डी बी टी द्वारा प्रायोजित अल्प कालीन प्रशिक्षण आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य विश्वविद्यालयों से अठारह प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। इस पाठ्यक्रम का विषय तीन मोड्यूल में अड्वान्स्ड जीनोमिक्स एण्ड प्रोटियोमिक्स प्रविधियों की मूल संरचना था। डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान पाठ्यक्रम निदेशक, डा. डी. प्रसाथ तथा सुश्री पी. उमादेवी पाठ्यक्रम समन्वयक थे।

पुस्तकालय

'एग्रि टिट बिट्स' के तीन इलक्ट्रोनिक संस्करणों को प्रकाशित किया। 78 CeRA आवश्यकताओं की पूर्ति ओन लाइन द्वारा की गयी। 29 पुस्तकें, 23 ई- बुक्स तथा 13 थीसीस / परियोजना रिपोर्ट पुस्तकालय के संग्रहालय में सम्मिलित की गयी। 13 पुस्तकों को ग्रीनस्टोन डेटाबेस में जोडा गया। संस्थान के संग्रहालय डीस्पाइस को नवीन शोध प्रकाशनों को सम्मिलित करके नवीनीकरण किया गया। 38 बाहरी तथा 790 आन्तरिक उपभोक्ताओं ने पुस्तकालय की सुविधाओं का लाभ उठाया।

परामर्श संसाधन सेल

एस. जे. आंकेगौडा तथा के. कण्डियाण्णन

काली मिर्च उत्पादन एवं सुधार के लिये 4 फरवरी 2015 को मेरीलैंड एस्टेट, कुन्नलाडी, दि नीलगिरि जिला, तमिलनाडु में कृषकों को परामर्श दिया।

सी. एन. बिजु

ट्रावनकोर रबड एवं चाय कंपनी लिमिटड, अम्बनाड, कोल्लम, 19-20 जनवरी 2015 में कृषकों को परामर्श दिया।

हिन्दी अनुभाग

राजभाषा कार्यान्वयन

संस्थान में दिनांक 30 मार्च 2015 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक डा. एम. आनन्दराज, निदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में गत तिमाही में किये गये कार्यों की समीक्षा की गयी। इसके अतिरिक्त पिछले वर्ष राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रयासों की समीक्षा एवं चर्चा हुई। संस्थान में दिनांक 20 मार्च 2015 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गयी। प्रस्तुत कार्यशाला में श्रीमती बिन्दु वर्मा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, महा डाकपाल कार्यालय, कोषिक्कोड ने राजभाषा कार्यान्वयन विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में संस्थान के 16 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रस्तुत तिमाही में मसाला समाचार (अंक 25 खंड 3) को प्रकाशित किया।

प्रकाशन

रिपोर्टाधीन काल में संस्थान के वैज्ञानिकों ने विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 16 शोध पत्र प्रकाशित किये। इनके अतिरिक्त 1 पुस्तक, 4 पुस्तक पाठ, 1 विस्तार पैम्फलेट, 7 लोकप्रिय लेख तथा 15 शोध पत्रों को विभिन्न संगोष्ठियों में प्रस्तुत किया गया।

तकनीकी स्थानान्तरण

कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र (एटिक)

रिपोर्टाधीन काल में एटिक द्वारा सात सौ इकतीस किसानों (अन्य राज्य से 151 किसान) को परामर्श सेवायें प्रदान की। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्कूल तथा कालेजों से 694 छात्रों ने संस्थान का भ्रमण किया। किसानों के पांच दल संस्थान का भ्रमण करके लाभान्वित हुये। तकनीकी एवं सूचना उपज को क्रय करके कुल 2,83,345 रुपये का राजस्व अर्जित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने 5-7 जनवरी 2015 को मेघालय के 20 किसानों के लिये प्रमुख मसालों में उत्पादन, प्रबन्धन एवं फसलोत्तर तकनीकी विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित करने में कृषि एवं ग्रामीण विकास केन्द्र, नोएडा, नई दिल्ली, ग्रामीण विकास क्षेत्र में कार्यरत सरकारी संगठन ने सहायता प्रदान की।

कार्यशाला का आयोजन

संस्थान ने 19-20 जनवरी 2015 को आई सी ए आर रिसर्च कोम्प्लक्स फोर उत्तर पूर्व हिमालय क्षेत्र, झरनापानी में उत्तर पूर्व राज्यों के लिये बारहवीं योजना के अन्तर्गत मसालों का उत्पादन, प्रबन्धन एवं फसलोत्तर तकनीकी में नवीन प्रगतियों पर दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में नागालैंड के 8 कृषि विज्ञान केन्द्रों से 30 अधिकारियों तथा दो एन जी ओ एवं केन्द्रीय बागवानी संस्थान, दिमापुर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके विभिन्न सत्रों में अदरक एवं हल्दी के फसल सुधार, गुणवत्ता रोपण सामग्रियों का उत्पादन, जैविक कृषि पद्धतियां, पौध संरक्षण एवं फसलोत्तर तकनीकी तथा मूल्य वर्धन शामिल थे। इस कार्यशाला में अग्र पंक्ति प्रदर्शनियों द्वारा अदरक एवं हल्दी की नवीन प्रजातियों के प्रचार की आवश्यकता पर बल दिया गया। गुणवत्ता रोपण सामग्रियों की कमी के निवारण के लिये कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित प्रदर्शनियों द्वारा अदरक खेती की प्रो-ट्रै विधि को विकसित करने का निश्चय किया।

आर्थिक संरक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने मार्च 2015 को दो एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये। काली मिर्च पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 3 मार्च 2015 को कुरुवट्टूर कृषि भवन में आयोजित किया जिसमें 20 किसानों ने भाग लिया। दिनांक 6 मार्च 2015 को तलिक्कुलम, त्रिश्शूर में 'जायफल की परिष्कृत उत्पादन पद्धतियो' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें 18 किसानों ने भाग लिया।

आदिवासी प्रतिनिधियों के लिये समुदाय आवश्यक मूल्यांकन कार्यशाला

संस्थान ने एम एस स्वमीनाथन रिसर्च फाउण्डेशन के सहयोग से 12 मार्च 2015 को कल्पट्टा के एम एसएसआर एफ के समुदाय कृषि जैवविविधता केन्द्र में एक समुदाय आवश्यक मूल्यांकन कार्यशाला आयोजित की गयी। अठारह आदिवासी गांव के प्रतिनिधियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा इस अवसर पर इन गांवों में फसल उत्पादकता को परिष्कृत करने के लिये आवश्यकताओं का एक चारटर को अंतिम रूप दिया गया।

आदिवासी किसानों के लिये अदरक की खेती पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने समुदाय कृषि जैवविविधता केन्द्र, एम. एस. स्वमीनाथन रिसर्च फाउण्डेशन, काननचेरी आदिवासी कोलनी, कणियामपेट्टा, वयनाडु जिला के सहयोग से 26 मार्च 2015 को अदरक की खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। यह प्रशिक्षण भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान के आदिवासी उप योजना संघटक के अन्तर्गत आयोजित किया

गया। जिससे 70 आदिवासी किसानों ने लाभ उठाया। प्रत्येक प्रशिक्षार्थी को अदरक की प्रजाति 'वरदा' की 5 कि. ग्राम रोपण सामग्री प्रदान की गयी। श्रीमती रोसिली थोमस, मुखिया, कणियांपेट्टा ग्राम पंचायत प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षा थी।

आदिवासी समुदाय को वितरण

आदिवासी समुदाय के लिये स्पर्शनीय समुदाय संपत्ति बनाने के उद्यम के एक भाग में आदिवासी उप योजना संघटक के अन्तर्गत भाकृअनुप - भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान ने 20 लिटर क्षमता वाले एक क्नापसाक पावर स्प्रेयर समुदाय कृषि जैवविविधता केन्द्र, एम एस एस आर एफ, पुत्तूरवयल, वयनाडु में संपन्न हुये समारोह में पुत्तनकुन्नु आदिवासी करषक संघ, आदिवासी किसानों का एक सहकारी संस्थान को प्रदान किये। यह उपकरण श्रीमती टी. उषाकुमारी, उपाध्यक्षा, वयनाडु जिला पंचायत ने पुत्तनकुन्नु आदिवासी कृषक संघ के प्रतिनिधियों को सौंपा।

कृषि विज्ञान केन्द्र

तकनीकी सप्ताह

कृषि विज्ञान केन्द्र, कोषिक्कोड द्वारा तकनीकी सप्ताह "एरुतुम कतिरुम" को कृषि तकनीकी प्रबन्धन संस्था (ए टी एम ए), कोषिक्कोड के सहयोग से 20 से 24 मार्च 2015 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, पेरुवण्णामुषि में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डा. एम. आनन्दराज, निदेशक, भाकृअनुप- भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान ने किया तथा श्रीमती पी. के. रंजिनि, प्रधान कृषि अधिकारी, कोषिक्कोड समारोह की अध्यक्षा थी। श्रीमती पी. सी. श्रीलता, परियोजना निदेशक (ए टी एम ए), कोषिक्कोड तथा डा. बी. शशिकुमार, प्रभागाध्यक्ष, फसल सुधार एवं जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग एवं प्रभारी वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-आई आई एस आर, कोषिक्कोड ने सत्र को सम्बोधित किया। डा. पी. एस. मनोज, कार्यक्रम समन्वयक (प्रभारी), कृषि विज्ञान केन्द्र ने सभा का स्वागत किया तथा श्री. के. एम. प्रकाश, विषय विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस चार दिवसीय कार्यक्रम में नारियल खेती, पारिवारिक खेती, पशु पालन, आलंकारिक मत्स्य संवर्धन, आनुवंशिक संसाधनों के परिरक्षण में समुदायों का उद्यम, पी पी वी तथा एफ आर अधिनियम, कृषि योजनायें जैसे विभिन्न पहलुओं के बारे में चर्चा हुई। तकनीकी सप्ताह समारोह के अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र के परिसर में कृषि एवं संबन्धित क्षेत्र में नवीन तकनीकियों को परिचित कराने के लिये एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी। इसके अतिरिक्त, 23 एवं 24 मार्च को मिशन ओन इन्टीग्रेटड डवेलपमेन्ट ओफ होर्टिकल्चर के तत्वावधान से "मसालों का वैज्ञानिक उत्पादन एवं संसाधन" पर जिला स्तर पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

अग्र पंक्ति प्रदर्शनी

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा निम्नलिखित अग्र पंक्ति प्रदर्शनियां आयोजित की गयी।

1. काली मिर्च की उच्च उपज वाली खुर गलन रोग सह्य प्रजाति की प्रदर्शनी।
2. अदरक के मृदु गलन प्रबन्धन के लिये पी जी आर आर संपुटित जैव कैप्स्यूल के उपयोग की प्रदर्शनी।
3. अमरान्तस की उच्च उपज वाली प्रजाति रेणुश्री को परिचित करना।
4. स्वच्छ पानी में पर्ल स्पोट फिश के बीज का उत्पादन।
5. मूल्य वर्धित उपजों का उत्पादन एवं विपणन।
6. संपूर्ण खाद्य मिश्रण पर प्रदर्शनी।
7. गायों में दूध ज्वर को रोकने के लिये अनियोनिक मिश्रण पिलाने की प्रदर्शनी।
8. नारियल के तंजोर म्लानी के एकीकृत प्रबन्धन पर प्रदर्शनी।
9. एकीकृत कृषि रीति।

खेती गत परीक्षण

निम्नलिखित खेती गत परीक्षण प्रगति पर है

क. काली मिर्च की फाइटोफ्थोरा खुर गलन रोग का प्रबन्धन।

ख. खारा पानी तालाब में एशियन सीबास का संवर्धन।

ग. कलमी काली मिर्च की दक्षता का मूल्यांकन।

घ. दुधारू पशुओं में थन शोफ के लिये दीमक मृदा का प्रभाव

प्रशिक्षण कार्यक्रम

किसानों, ग्रमीण युवाओं तथा विस्तार कर्मियों के लिये कुल 31 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में 1173 प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया। कृषि विज्ञान केन्द्र ने केरल के विभिन्न भागों में आयोजित पांच प्रदर्शनियों में भाग लिये। एक प्रदर्शनी में कृषि विज्ञान केन्द्र के स्टाल का दृश्य।

पीएच. डी. पंजीकरण

छात्र	विषय	विश्व विद्यालय	मार्गदर्शक
सुश्री ब्लस्सी, एम. बेबी	आईडन्टिफिकेशन ओफ नोवल टारगेट जीन्स इन बरोयिंग नेमटोड (रेडोफोलस सिमिलिस) थ्रू जीनोम वाइड ट्रान्स्क्रिप्टोम एनालिसिस	मैंगलूर विश्व विद्यालय	सन्तोष जे. ईपन

पीएच. डी. उपाधि

नाम	थीसीस का शीर्षक	विश्व विद्यालय	मार्गदर्शक
सिल्जो ए.	कैरक्टरैसेशन एण्ड डवेलपमेन्ट ओफ डाइग्नोस्टिक्स फोर वाइरसेस इनफेक्टिंग स्मोल कारडमोम	मैंगलूर विश्व विद्यालय	ए. आई. भट्ट

पदोन्नति

नाम	पदोन्नत पद	प्रभावी दिनांक
श्री. पी. प्रकाश	तकनीकी सहायक (वाहन चालक)	1 जून 2012

स्थानान्तरण

नाम	पद	संस्थान	दिनांक
सुश्री. एन. के. अनुपमा	उच्च श्रेणी लिपिक से कनिष्ठ लेखा अधिकारी	सी आर आई डी ए, हैदराबाद	17 जनवरी 2015

मसाला समाचार

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन

भा. कृ. अनु. प. - भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड- 673012 (केरल), भारत

दूरभाष : 0495 2731410, फेक्सः 0495 2731187

नोटः पी डी एफ संस्करण वेब साइट http://www. spices.res.in/ newsletter/ index.php पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशक
एम. आनन्दराज
निदेशक
भा. कृ. अनु. प. - भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड

संपादक
राशिद परवेज़
एन. प्रसन्नकुमारी

छाया चित्र
ए. सुधाकरन

Printed at: G K Printers, Kaloor, Cochin - 682 017. Phone : 0484 2340013. Email : gkcochin@gmail.com